आखरी मंज़िल पर लकड़ी के बीम आज भी शत पर कॉटट (आंतिक एंट) के मेटीरियल के साथ जुडे हुए है और इनका भी फर्श की तरह गर्माहट को क़ैद करके रखने और धीरे धीरे छोड़ने का काम था|

पत्तों को इस इमारत की आखरी मंज़िल पर सूखाया जाता था जहाँ पर पहले (आज भी) छोटी खिड़कियां हुआ करती थी जो ज़्यादा धूआ हो जाने पर उनको खोल कर धुआ निकाल देने के काम भी आती थी|
आज के दिन, हर इक ऑटोमॅटिक घूमने वाली खिड़की एक विशेष प्रॉजेक्ट का हिस्सा है जिसकी वजह से आज आंतिका तबाक्काया में हवा और रोशनी आती है और इस होटेल में मेहमानों के रहने का इंतेज़ाम हो सकता है|